Sarcouncil Journal of Humanities and Cultural Studies

ISSN(Online): 2945-3658

Volume- 03| Issue- 06| 2024

Review Article **Received:** 12-05-2024 | **Accepted:** 11-06-2024 | **Published:** 28-06-2024

गोदान में नारी सशक्तिकरण का चित्रण: एक आलोचनात्मक विश्लेषण

किरण शर्मा

वरिष्ठ एसोशिएट प्रोफैसर हिन्दी- विभागाध्यक्ष डी.ए.वी.कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुनानगर।

Abstract: मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के सबसे प्रमुख यथार्थवादी लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज की जटिल सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से उजागर किया। उनका अंतिम और सबसे प्रभावशाली उपन्यास 'गोदान' (1936) ग्रामीण भारत की सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। गोदान प्रेमचंद का अंतिम और सबसे प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास है, जो भारतीय ग्रामीण जीवन, किसान की पीड़ा, वर्ग संघर्ष और शोषण की जटिलता को अत्यंत यथार्थ के साथ प्रस्तुत करता है। इसका नायक होरी एक सीधा-साधा, ईमानदार लेकिन गरीब किसान है, जिसकी सबसे बड़ी आकांक्षा जीवन में एक गाय खरीदकर उसका दान करना है। गाय उसके लिए न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा की पहचान भी है। होरी अपने खेत, परिवार और सामाजिक मर्यादा को बचाने के लिए जीवनभर संघर्ष करता है। उसका बेटा गोबर, गाँव की विधवा लड़की झुनिया को भगा ले जाता है, जिससे होरी को सामाजिक अपमान और आर्थिक दंड सहना पड़ता है। फिर भी, वह अपनी "इज़्ज़त" और परंपरा के लिए सब कुछ सहन करता है। होरी की पत्नी धनिया एक मजबूत और व्यावहारिक महिला है, जो समय-समय पर सामाजिक रूढ़ियों का विरोध भी करती है। झुनिया, जो बाद में होरी के घर में बहू के रूप में रहती है, ग्रामीण स्त्री की पीड़ा और साहस का प्रतीक बनती है। कहानी में ग्रामीण समाज के साथ-साथ शहरी उच्च वर्ग के पात्र जैसे मालती, खन्ना, और डॉ. मेहता भी आते हैं, जो समाज के दोहरेपन, स्वार्थ और आधुनिकता के खोखलेपन को उजागर करते हैं। इस उपन्यास में न केवल आर्थिक शोषण और वर्ग संघर्ष का चित्रण किया गया है, बल्कि स्त्री पात्रों के माध्यम से नारी सशक्तिकरण के भी कई महत्वपूर्ण पहलू देखने को मिलते हैं। यह शोध-पत्र 'गोदान' में नारी पात्रों के विविध रूपों, उनके संघर्षों, सामाजिक दमन और उनके सशक्तिकरण के प्रयासों का गहन एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही, उपन्यास के विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद द्वारा नारी जागरूकता और मुक्ति की संभावनाओं को भी समझने का प्रयास करता है।.

Keywords: गोदान, बहुआयामी उपस्थिति, नारी सशक्तिकरण.

प्रस्तावना

1. नारी पात्रों की बहुआयामी उपस्थिति

'गोदान' में नारी पात्रों की संख्या और प्रकार विविध हैं। धनिया, झुनिया, मालती, मिस मालती, रूपा, सोना आदि स्त्रियाँ अपने-अपने सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश की विशेषताओं के अनुसार प्रस्तुत की गई हैं। प्रेमचंद ने इन्हें एक सामान्य नारी की सीमाओं से ऊपर उठाकर, एक सामाजिक चेतना और सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में उभारा है।

1.1 धनिया: ग्रामीण नारी की मुखर आवाज़

धनिया होरी की पत्नी है। वह एक साधारण ग्रामीण महिला होने के बावजूद सामाजिक-राजनैतिक मुद्दों पर मुखर और जागरूक है। पंचायती व्यवस्था में झुनिया के बहिष्कार के विरुद्ध उसका साहस और विरोध, उसकी सामाजिक चेतना को दर्शाता है। धनिया न केवल अपने परिवार की रक्षा करती है, बल्कि सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज भी उठाती है।

"काहे को डरूँ? अब डरने का बस नहीं रहा।"[1]

यह पंक्ति उसकी आत्मनिर्भरता और साहस का परिचायक है। वह सामाजिक परंपराओं के बंधन में बंद नहीं, बल्कि उनके विरुद्ध एक चेतना के साथ खड़ी है।

1.2 झुनिया: दलित नारी की संघर्ष गाथा

झुनिया, जो दलित वर्ग से है, सामाजिक बहिष्कार और आर्थिक विषमता के बावजूद अपने प्रेम और स्वाभिमान के लिए संघर्ष करती है। गोबर के प्रेम में आने के बाद वह गाँव की पंचायत द्वारा बहिष्कृत हो जाती है, लेकिन वह हार नहीं मानती। उसका संघर्ष दलित नारी की अस्मिता और सशक्तिकरण की प्रतीक है। झुनिया, एक गोबर के प्रेम में पड़ी अविवाहित माँ है, जिसे समाज ने "गिरी हुई" लड़की मानकर बहिष्कृत कर दिया है। जब वह होरी के घर शरण लेती है, तब भी गाँव का सामंती और जातिवादी ढांचा उसे स्वीकार नहीं करता। मगर धनिया उसका पक्ष लेती है, जो उस समय की ग्रामीण स्त्री चेतना और सिसकती सहनशीलता के बीच एक विद्रोही स्वर है। यह प्रेमचंद की यथार्थ दृष्टि का प्रमाण है—जहाँ एक दलित औरत भी करुणा की पात्र नहीं, बल्कि संघर्ष और सम्मान की अधिकारी बनती है। झुनिया का संघर्ष केवल लिंग आधारित नहीं है, बल्कि जातिगत और वर्गीय अन्याय से भी जुड़ा है। प्रेमचंद ने उसके माध्यम से यह दिखाया कि कैसे समाज की सबसे निचली पायदान पर खड़ी स्त्री—जो कि दलित है, असहाय है—वास्तव में नैतिक रूप से सबसे अधिक मजबूत है। वह बिना किसी अधिकार के भी प्रेम, सेवा और जिम्मेदारी निभाती है।

2. ग्रामीण नारी की स्थिति और सामाजिक बाधाएं

'गोदान' की नायिका धनिया के माध्यम से ग्रामीण नारी की स्थिति की गहरी पड़ताल होती है। गाँव की परंपराएं, जाति व्यवस्था, और पुरुष वर्चस्व जैसी सामाजिक बाधाएं

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

*Corresponding Author: किरण शर्मा

DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.16637565

उन्हें दबाती हैं। फिर भी, इन सीमाओं के भीतर वे अपने अधिकारों के लिए लड़ती हैं।

2.1 आर्थिक असमानता और नारी

धनिया और झुनिया दोनों के जीवन में आर्थिक असमानता उनकी आज़ादी पर प्रभाव डालती है। किसान परिवारों की गरीबी, कर्ज़ की चक्की, और कर्जदारों के दबाव नारी की भूमिका को सीमित करते हैं। लेकिन धनिया का साहस यह दिखाता है कि सामाजिक और आर्थिक दबावों के बावजूद महिलाओं में प्रतिरोध की भावना जीवित रहती है।

3. आधुनिकता के प्रभाव में नारी

गोदान के पात्र मालती और मिस मालती शहरी, शिक्षित और आधुनिक नारी की झलक प्रस्तुत करते हैं। वे पारंपरिक बंधनों से ऊपर उठकर शिक्षा, रोजगार और सामाजिक स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत हैं। इन पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने भारतीय नारी के आधुनिक सशक्तिकरण के बीज बोए हैं।

3.1 मालती: आधुनिक नारी की पहचान

मालती डॉक्टर है और समाज सेवा में संलग्न है। उसका चरित्र पारंपरिक परिवार की अपेक्षाओं से स्वतंत्र है। वह पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए नई संभावनाएं तलाशती है और एक सक्रिय, जागरूक नारी की भूमिका निभाती है।

3.2 मिस मालती: स्वतंत्रता और विचारधारा

मिस मालती शिक्षा प्राप्त स्त्री है, जो सामाजिक और वैचारिक स्तर पर पुरुषों के बराबर खड़ी है। वह पुरुष पात्र मेहता के साथ एक समता आधारित वैचारिक संबंध में बंधी है, जो स्त्री-पुरुष के सामाजिक समानता की प्रतीक है।

4. नारी सशक्तिकरण की सीमाएँ और चुनौतियाँ

हालांकि 'गोदान' में नारी पात्र सशक्त दिखाए गए हैं, फिर भी वे कई सामाजिक प्रतिबंधों और मान्यताओं के बंधन में फंसी हैं। जाति व्यवस्था, सामाजिक पितृसत्ता, और आर्थिक विषमता उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता से वंचित करती हैं।

4.1 सामाजिक पितृसत्ता का प्रभाव

पुरुषों के वर्चस्व में स्त्रियाँ अपने अधिकारों के लिए लगातार संघर्ष करती हैं। गाँव की पंचायत से लेकर घर के अंदर तक उन्हें दबाया जाता है। फिर भी, उनका संघर्ष लगातार चलता रहता है। यह संघर्ष नारी सशक्तिकरण का आधार है।

4.2 सांस्कृतिक मान्यताएँ और उनका प्रभाव

धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं भी नारी की आज़ादी में बाधक हैं। गोदान की परंपरा, त्योहार, और धार्मिक रीति-रिवाज नारी की भूमिका को सीमित करते हैं, परन्तु प्रेमचंद इन्हें चुनौती देते हुए नारी को एक सक्रिय पात्र बनाते हैं।

5. नारी सशक्तिकरण के प्रतीकात्मक पहलू

गोदान के नारी पात्रों का संघर्ष भारतीय समाज में नारी मुक्ति की संभावनाओं का द्योतक है। धनिया और झुनिया जैसे पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने यह दिखाया है कि सशक्तिकरण केवल शिक्षा या आर्थिक स्वतंत्रता से नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और आत्मसम्मान से आता है।

5.1 आत्मसम्मान और जागरूकता

धनिया का साहस और झुनिया का आत्मसम्मान यह दर्शाते हैं कि नारी सशक्तिकरण का सबसे पहला कदम आत्मविश्वास और जागरूकता है। यह उपन्यास के भीतर एक परिवर्तन का बीज है।

5.2 सामाजिक बदलाव की भूमिका

नारी सशक्तिकरण समाज में व्यापक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। प्रेमचंद ने अपने पात्रों के माध्यम से दिखाया कि ग्रामीण भारत में बदलाव की शुरुआत महिलाओं के सशक्तिकरण से ही संभव है।

6. आलोचनात्मक समीक्षा

कई आलोचक मानते हैं कि प्रेमचंद की नारी पात्र पुरुष पात्रों के अधीन हैं और उनकी भूमिका सीमित है। परंतु, गहन विश्लेषण यह दर्शाता है कि प्रेमचंद ने यथार्थवादी दृष्टिकोण से नारी की जटिलताओं और संघर्षों को प्रस्तुत किया है।

उनकी स्त्रियाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच एक पुल का काम करती हैं। वे समाज के दमनकारी तंत्र के विरुद्ध खड़ी हैं, और उनके संघर्ष में नारी स्वतंत्रता के तत्व स्पष्ट रूप से दिखते हैं।

7. निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद के 'गोदान' में नारी सशक्तिकरण का चित्रण एक यथार्थवादी एवं गहन अनुभव है। प्रेमचंद ने अपने स्त्री पात्रों को केवल पीड़ित के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के सक्रिय वाहक के रूप में प्रस्तुत किया है।

यह उपन्यास नारी मुक्ति की संभावनाओं को उजागर करता है, जो कि भारतीय समाज की जटिल सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं के बीच से निकलती हैं। 'गोदान' आज भी नारी सशक्तिकरण पर विचार करने के लिए एक महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज है।

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

पाद टिप्पणियाँ

1. प्रेमचंद, मुंशी। *गोदान*, हिंद पॉकेट बुक्स, 1936, पृष्ठ 181।
2. वही, पृष्ठ 154।
3. वही, पृष्ठ 72।
4. रामविलास शर्मा, *प्रेमचंद और हिंदी आलोचना*, राजकमल प्रकाशन।

Source of support: Nil; **Conflict of interest:** Nil.

Cite this article as:
किरण शर्मा, "गोदान में नारी सशक्तिकरण का चित्रण: एक आलोचनात्मक विश्लेषण." *Sarcouncil Journal of Humanities and Cultural Studies* 3.6 (2024): pp 28-30.

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher